nwda.gov.in

सालभर में मात्र तीन तहसील में सुधरा भूजल स्तर

अजय राय • नई दिल्ली

34 तहसीलों में से तीन जगह भूजल स्तर में सुधार, तीन जगह पर स्तर बिगड़ा और 28 जगहों पर स्थिति जस की तस

राजधानी की 14 तहसीलों के भूजल में है खारापन

राजधानी के 11 में से पांच जिलों की 14 तहसीलों का भूजल जांच में खारा पाया गया है। चार जिले ऐसे हैं जहां के हर तहसील का पानी खारा है। इनमें उत्तरी, उत्तर-पश्चिम, दक्षिण-पश्चिम व पश्चिम जिला शामिल है। इनमें नई दिल्ली जिले की दो तहसीलें भी हैं।

राजधानी में भूजल रिचार्ज और उसका दोहन विभिन्न एजेंसियों के लिए चुनौती बनता जा रहा है। बीते एक साल में अवैध बोरवेल को बंद करने और वर्षा जल संरक्षण की कोशिश कागजों पर ज्यादा परवान चढ़ी है। जल शक्ति मंत्रालय की केंद्रीय भूजल संसाधन आकलन रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली की 34 तहसीलों में से 28 के भूजल स्तर में बीते वर्ष की तुलना में कोई बदलाव नहीं हुआ। इस दौरान तीन तहसीलों में स्थिति थोड़ी सुधरी जरूर, लेकिन उतनी ही तहसीलों में स्थिति बिगड़ भी गई।

पोर्ट के अनुसार, दक्षिण पश्चिम जिले की द्वारका व दक्षिण की हौज खास तहसील के भूजल स्तर में मामूली सुधार के बाद पिछले वर्ष के मुकाबले अति दोहित श्रेणी से खतरनाक श्रेणी में पहुंच गई है। इन दोनों तहसीलों में पिछले वर्ष सौ प्रतिशत से अधिक भूजल दोहन हो रहा था। दक्षिण पश्चिम जिले की नजफगढ़ तहसील में भूजल स्तर सुधर कर कम खतरे वाली से सुरक्षित जोन में पहुंच गया है। मध्य जिले की कोतवाली, पूर्वी की गांधी नगर व प्रीत विहार इलाके में पिछले साल के मुकाबले इस साल भूजल दोहन तेज हो गया है और यह कम सुरक्षित से खतरनाक श्रेणी में पहुंच गया है। वहीं, बाकी 28 तहसीलों की स्थिति जस की तस है। इसमें अधिकांश तहसीलें सुरक्षित जोन से बाहर हैं। वन अर्थ पत्रिका में आइआइटी-गांधीनगर की प्रकाशित एक रिपोर्ट में कहा गया है कि वैश्विक औसत तापमान वृद्धि को दो डिग्री सेल्सियस के भीतर सीमित करने से उत्तर भारत में भूजल भंडारण को लाभ मिल सकता है। अध्ययन में भूजल भंडारण परिवर्तनशीलता का अध्ययन करने के लिए केंद्रीय भूजल बोर्ड द्वारा भूजल स्तर और उपग्रह अवलोकन से प्राप्त डेटा का विश्लेषण किया गया। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के जल प्रौधोगिकी केंद्र के पूर्व परियोजना निदेशक प्रो. मान सिंह ने कहा कि भूजल स्तर ठीक करने के लिए दीर्घकालिक योजना बनानी होगी। इसमें ज्यादा से ज्यादा वर्षा जल संरक्षण के उपाय करने होंगे। तालाबों को विकसित किया जा सकता है। इसके सा ही तमाम घरों, होटलों में लगे बोरवेल से अवैध तरीके से जल निकासी की जांच तेज करके उसे बंद किया जाए।